Rs. 5/-

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 8, August 2013

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 8, August 2013 **वर्ष 18, अंक 8, अगस्त 2013**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र
Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव
Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार
Illustrator / चित्रकार
Arup Kumar Gupta
अरूप कुमार गुप्ता

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

Contents/सूची

सरफरोशी की तमन्ना	रामप्रसाद बिस्मिल	2
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	3
Jallianwallan Bagh	Bhisham Sahni	7
कालापानी : क्रांतिकारियों...	अल्पना भसीन	12
मोर	गोविन्द भारद्वाज	15
मछली जल की रानी है	संगीता सेठी	16
Easy-going Harpey	Avril C. D'souza	19
घमंडी रहे अकेला	रश्मि बड़थ्वाल	21
राखी का त्योहार	अक्षिता	24
Loony Limericks	Ratna Manucha	25
राम पहुँचा शहर	प्रभात कुमार दास	26
The Baobab Tree	Anupa Roy	27
When Raju began to...	Yash K.K.	30
विशालतम पक्षी : शुतुरमुर्ग	सतीश कुमार अल्लीपुरी	31

***Editorial Address* / संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy / एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription / वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचो को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।

Storytelling Session on NBT's Foundation Day

Dr M M Pallam Raju, Hon'ble Union Minister for Human Resource Development inaugurated the National Centre for Children's Literature (NCCL) Library, a wing of the National Book Trust, India at Nehru Bhawan on the occasion of the 56th Foundation Day of NBT on 1 August 2013. He appreciated the efforts of NBT and hoped that this Library will serve the children and children's literature.

On this occasion, a storytelling session for school children was also organized at the NBT Book Shop in which Shri Prakash Manu and Ms Paro Anand, renowned authors for children interacted with the children and narrated some of their stories. Dr Pallam Raju also participated in the session and said that such sessions should be held regularly. He also had a photo session with the participating children.

Recalling his childhood days, Shri Prakash Manu said that he used to read a lot apart from his textbooks and from the habit of reading he developed his skills in writing. He said that books open the world to us, provide us knowledge with pleasure and therefore books are important.

Ms Paro Anand said that during her childhood she was not sure what she wished to be but she was sure that she wanted to have knowledge about different subjects and therefore she started reading books. She said that books gave her a path and she started writing stories.

The storytelling session enthralled the students and visitors as well. Students from various Kendriya Vidyalayas from South Delhi participated in the session.

सरफरोशी की तमन्ना

रामप्रसाद बिस्मिल

स्वाधीनता आंदोलन के दौर का यह बेहद लोकप्रिय गीत था, जिसे देशभक्त और क्रांतिकारी पूरे जोशो-खरोश के साथ गाते थे।

–सम्पादक

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुए-कातिल में है।

रहबरे-राहे-मुहब्बत रह न जाना राह में
लज़्ज़ते-सहरा-नवर्दी दूरिए-मंजिल में है
वक्त आने दे बता देंगे तुझे, ऐ आसमाँ
हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है।

आज फिर मक़तल में कातिल कह रहा है बार-बार
क्या तमन्नाये-शहादत भी किसी के दिल में है
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है।

ऐ शहीदे-मुल्को-मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफिल में है
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है।

(नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित
'स्वतंत्रता आंदोलन के गीत'
संकलन (देवेश चंद्र) से उद्धृत)

धारावाहिक 'उपन्यास'

सात समुंदर

खाली पिंजरा, उड़ गया पंछी

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

पिछले अंक में आपने पढ़ा : नारायणन की पोती गायत्री को तैरना सीखने के बाद हर दिन तैरने की ललक होती है। वह हर दिन अपने 'दद्दा' को इसके लिए टोकती है। अगस्त का महीना समाप्त होने को है और ओणम उत्सव की शुरुआत के दिन हैं। ओणम में क्या-क्या होता है इसके विवरण के साथ ओणम के पर्व के शुरुआत की कथा भी कही गई है। दद्दा अब गायत्री को पंपा-किनारे तैरने को कहते हैं तो वह झटपट तैयार हो जाती है और फिर दोनों चल पड़ते हैं। अब आगे पढ़ें।

खिड़की के पास चिरूता बैठी थी। उसके द्वार के सामने फूलों से अथपु या अनाज की रंगोली पुक्कलम कुछ भी नहीं है। सामने के इमली के पेड़ की पत्तियों में एक सिहरन-सी हो रही थी। उधर तालाब सफेद कमल जैसे फूलों से भरा पड़ा है।

सारा गाँव सजा हुआ था। नये-नये कपड़े पहनकर लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। झुंड-के-झुंड लोग नदी की ओर चले जा रहे थे।

चिरूता के घर के ऊपर एक फटा हुआ कागज़ का तारा लटक रहा था। बड़ा दिन के समय उसे छत पर टाँगा गया था। तब से धूप, बारिश और तूफान से लड़ता हुआ वह वहीं पड़ा है।

''अरे चिरूता, कहो कैसी हो?'' उधर से गुजरते हुए नारायणन ने पूछा।

चिरूता ने उनका अभिवादन किया।

''रैचेल की कोई चिट्ठी आई?''

''नहीं सर। चिट्ठी कहाँ? अकेली जान, पता नहीं वहाँ दुबई में क्या कर रही है!'' चिरूता का स्वर उदास हो गया।

यहाँ के अधिकतर ईसाइयों के परिवार का कोई-न-कोई एक सदस्य अरब या खाड़ी के देशों में रोजगार में लगा है। जो बिलकुल गरीब हैं, वे अभी भी खेती करते हैं। उनका नाम भी विचित्र है। सैमुयेल को शमयल कहते हैं और जोसेफ को औसेप।

नारायणन ने आगे कहा, ''और आर्थर? उसकी प्रैक्टिस कैसी चल रही है?''

ये सभी उनके छात्र रह चुके हैं, इसलिए जब घरवाले मिल जाते हैं तो वे सभी का हालचाल मालूम कर लेते हैं।

"वह भी तो तिरुवनंतपुरम में ही पड़ा है।"

"ओणम में भी घर नहीं आया?"

"नहीं, आजकल तो उसे ठीक से नींद भी नहीं आती।"

"क्यों? क्या हुआ? तबीयत ठीक है न? अरे, वह इतना अच्छा बैडमिंटन प्लेयर बना, वह तो हमलोगों का गौरव है।"

अपनी चादर संभालते हुए नारायणन पोती का हाथ पकड़कर आगे बढ़ गए।

चौराहे से ज्यों ही पंपा की ओर मुड़े दाहिने मछुआरों की बस्ती दिखाई दी। चारों ओर बालू, उसी के बीच एक-एक दीप जैसी साफ सुथरी छोटी-छोटी कुटिया। किसी-किसी का मकान पक्का भी है। ऊपर टाइल्स की छत, ये लोग मछली के व्यापारी भी हैं। उधर ताड़ के पेड़ों के नीचे एक नाव पेट के बल पड़ी थी-शायद मरम्मत या रंग-रोगन के लिए। उसी पर अपनी पीठ को टेक देकर पैर फैलाए बुढ़िया कुंजुपातुम्मा बैठी थी। मुहल्ले के बच्चे उससे कहानी सुन रहे थे। अपने सन

जैसे सफेद बालों को सहलाते हुए वह कह रही थी, ''किसानों के लिए जैसे यह धरती है, उसी तरह हम मछुआरों के लिए यह समुंदर है। यही हमारा पेट पालता है। इसके पेट के अंदर जाने कितने 'रतन' हैं-मोती, मूँगा और न जाने क्या-क्या, लेकिन हम मछुआरों के लिए सबसे बड़ा 'रतन' है मछली।

''कहते हैं समुंदर की गहराई में एक बहुत बड़ा सफेद रंग का महल है। वहाँ जलदेवता और उनकी बीवी रहती हैं। उस महल के दरवाजे पर जाने कितने बड़े-बड़े फनवाले साँप पहरा देते हैं। जब कोई मछुआरा मछली पकड़ने के लिए निकलता है तो उसकी मछुआरिन को समुंदर के देवता की प्रार्थना करनी चाहिए-''हे सागर-देव! हमारी रक्षा करना'', तभी अल्लाताला उनकी रक्षा करते हैं, उनके दूत जिब्राइल तूफानों से नावों को बचाते हैं। इसके लिए मछुआरिन को भी तब तक कुछ नहीं खाना चाहिए जब तक उसका मछुआरा वापस न आ जाए, वरना सागर में ऐसा तूफान आ खड़ा हो जाएगा कि समुंदर इतना बड़ा मुँह बा के सब कुछ निगल जाएगा।''

सुनते-सुनते बच्चों की आँखें स्थिर हो गईं।

''कहो कुंजुपातुम्मा, क्या सुना रही हो?'' नारायणन ने जाते-जाते आवाज दी।

''आदाब मास्टर साब!'' कुंजुपातुम्मा ने अपने पैर खींच लिये।

''और सुनाओ, हासनकुट्टि की तबीयत कैसी है?''

''अब क्या बताएँ, मुँह से बोली भी तो नहीं निकलती! सब कुछ इशारों से समझाता है। कुछ खा नहीं सकता। पानी तक निगलने में तकलीफ होती है। पता नहीं, खुदाताला की क्या मर्जी है!''

''घबराओ मत। एर्नाकुलम जाता है न?''

''हाँ, वही बिजली की सेकाई के लिए। इतनी दूर आना-जाना! कहाँ से सपरेगा इतना खर्च?''

''हिम्मत से काम लो बीबी। आज ओणम में घर से निकली नहीं?''

झींगा मछली की टोकरी को दिखाकर उसने कहा, ''बस, हमारी ये चेम्मिन बिकती रहे यही हमारा ओणम है।''

इसी तरह ये दोनों-अप्पुपन और कुचुमोल-लोगों से बातें करते हुए आगे बढ़ते गए।

नदी के किनारे भारी भीड़ थी। चारों ओर शोर-शराबा। नौका प्रतियोगिता आरंभ हो चुकी थी। सजी हुई लंबी-लंबी नौकाओं पर पच्चीस-तीस मल्लाह एक साथ बैठकर नौकाओं को खींच रहे थे। एक-एक आदमी के हाथ में एक-एक डाँड़ था। किसी के हाथ में दाहिने वाला है तो उसके आगे-पीछे वालों के पास बायें वाला है। लोग उछल रहे थे। अपनी-अपनी टीम की विजय के लिए चिल्ला रहे थे। चारों ओर वातावरण में उल्लास पंख फैलाए उड़ रहा था।

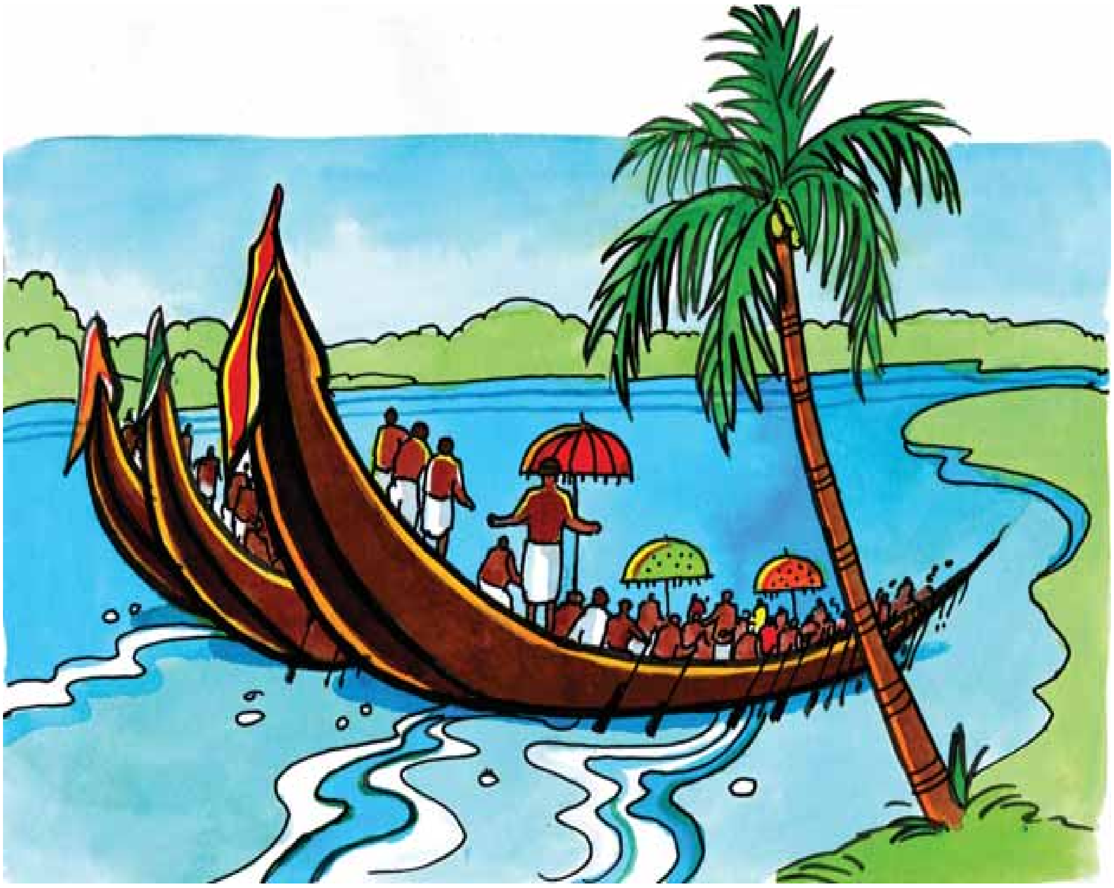

नारायणन कसकर गायत्री का हाथ अपनी मुट्ठी में पकड़े हुए था। अचानक उसने देखा, वह एक टेबुल के सामने खड़ी है। चारों तरफ कई लोग बैठे थे, सभी व्यस्त थे। उधर नौका प्रतियोगिता खत्म हो चुकी थी। माइक पर उसके परिणाम की घोषणा हो रही थी।

गायत्री कुछ समझ पाती, इसके पहले ही टेबुल के उधर बैठे आदमी ने उससे पूछा, ''नाम?''

गायत्री ने डरते-डरते अपना नाम बताया।

उसने लिख लिया और दद्दा से कहा, ''जाइए सर, उस तरफ चले जाइए।''

नारायणन ने हँसकर कहा, ''चल, आज तू भी तैराकी प्रतियोगिता में भाग ले ले।''

''दद्दा, मुझे डर लग रहा है!''

''धत्, पगली कहीं की!''

(क्रमश:...)

सी, 26/35-40 ए, रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उत्तर प्रदेश)

From NBT's Treasure Trove

Jallianwallan Bagh

Bhisham Sahni

Jallianwala Bagh Massacre is one of the most important event in the freedom struggle of India as it triggered-off the feeling of nationalism among Indians including common people, leaders, freedom fighters and revolutionaries. Thousands of people had gathered to celebrate Baisakhi at Amritsar and were peacefully demanding the release of two leaders, Dr Satya Pal and Dr Saifuddin Kitchlew who were arrested for leading Satyagrah Movement in Punjab. But General Dyer without giving any warning to the people, ordered his soldiers to fire bullets at people. Here is an account of the Massacre that gave a new direction to the freedom struggle of India.

13 April was the day of the Baisakhi festival. It was on this day in 1699 that Guru Gobind Singh founded the Khalsa sect.

In Amritsar, this festival was usually celebrated with great enthusiasm. But on that particular Baisakhi day, the atmosphere was quite different. On the four previous days there had been a strike. Every day the dead bodies of people who had been the targets of the firing on 10 April were being brought out on biers.

The British authorities knew that on Baisakhi, people in their thousands would go to the Golden Temple and, because Jallianwala Bagh was close by, they would also go straight there from the temple.

In the morning of 13 April, General Dyer again showed his strength by marching his troops through the town. At various points, drums were beaten and when people collected around this announcement was made:

No person residing in the city is permitted to leave the city without a pass. No person residing in Amritsar city is permitted to leave his house after eight. Any persons found in the streets after eight are liable to be shot. No procession is permitted in the city. Any gathering of four men would be looked upon and treated as an unlawful assembly and dispersed by force of arms, if necessary.

Immediately after General Dyer's march, several young men came out into the streets and, beating empty tin cans in

place of drums, went from one place to another announcing that at 4.30 p.m. there would be a public meeting at Jallianwala Bagh. It was 12.40. Dyer was still in town when he received the news that his proclamation had not had any particular effect and that at 4.30 p.m. there would be a public meeting at Jallianwala Bagh, notice of which was being given all through the city.

At various points in the city, police and army posts were set up. Even after this, General Dyer still had 400 soldiers with him.

Right from 2 o'clock, people started gathering in Jallianwala Bagh. At 4 o'clock, Dyer was informed that people had turned out there in great strength.

General Dyer immediately made preparations and, accompanied by his army contingent, set off for Jallianwala Bagh, his car leading the way. His favourite officer, Captain Briggs, was with him. Behind them were two armoured cars, and a police car carrying Police Superintendent Rehill and Plomer.

Along the route, at five different places, army posts had been set up with 40 soldiers each. The contingent which went straight into the garden with General Dyer consisted of 50 Indian soldiers armed with rifles and 40 Gorkhas who only had their Kukris.

Jallianwala Bagh was a large, uneven piece of ground around which houses had been built on all sides. Only on the southern side was there an opening. But

a wall about five feet high had been put up there. Four or five narrow lanes opened onto the ground. Where one of the lanes led in from the market, the ground was at a slightly higher level. Inside the Bagh there was a sepulcher and an open well.

Dyer, with his contingent, entered the Bagh through the lane leading in from the market which was so narrow that the armoured cars could not enter it. Dyer, leaving these vehicles outside, entered the garden.

By that time there was a sizeable crowd in the Bagh. Around 20,000 people were present. And a man on the dais was giving a speech. The proceedings of the meeting were being conducted in a perfectly peaceful fashion. On entering the garden, Dyer along with his army contingent posted himself on the intervening high piece of ground. Once there, he did not wait even for a second. He positioned 25 armed soldiers on his right and 25 on his left and, without giving the crowd any warning, gave the order to fire.

The people sitting in the gathering were terror-stricken. There was no way for them to get out of the garden. The entire crowd got up and started running to escape the bullets raining down on them. As they ran hither and thither, it turned into a stampede. There were also men in the crowd who had seen action in the war. They kept shouting to the people that instead of running, they should lie flat on the ground. But who would listen to them in such a state of terror? In whichever direction the people ran, they found their way blocked. There were the walls of houses all around. There were hundreds of people running towards each of the narrow lanes leading out of the garden. When Dyer saw this, he ordered his soldiers to fire in the direction where people were trying to rush out. Some of them fell to the bullets, others were trampled under the feet of the stampeding crowds. Others, trying to climb over the five-foot wall, were hit by bullets and fell to the ground. There were some who ran towards the well and jumped into it.

At the very beginning, some of the soldiers fired into the air, at which General Dyer shouted: “Fire low! What have you been brought here for?”

The whole ground was like a burning cauldron. A man called Arthur Swinson gave the following eyewitness account of the episode:

Towards the exits on either flank, the crowd converged in their frantic effort to get away, jostling, clambering, elbowing and trampling over each other… Seeing this movement, Briggs drew Dyer’s attention to it, and Dyer, imagining that these sections of the

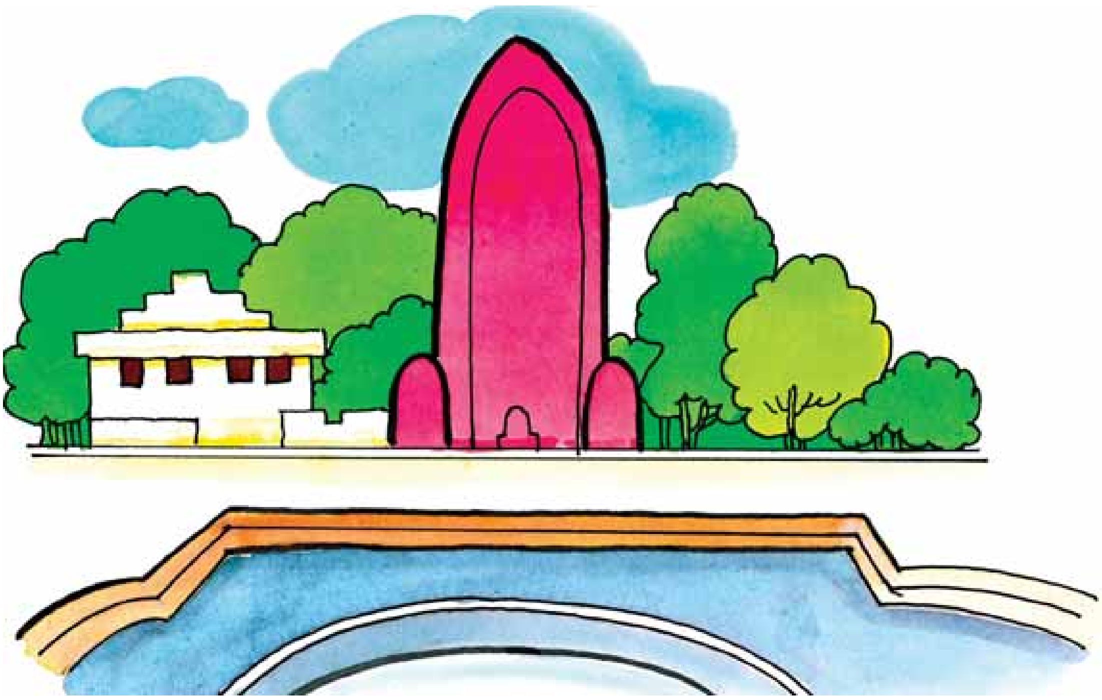

crowd were getting ready to rush him, directed the fire of the troops straight at them. The result was a horror: men screamed and went down, to be trampled by those coming after. Some were hit again and again. In places the dead and wounded lay in heaps; men would go down wounded, to find themselves immediately buried beneath a dozen others.

The firing still went on. Hundreds, abandoning all hope of getting away through the exits, tried the walls which in places were five feet high and at others seven or ten. Fighting for a position, they ran at them, clutching at the smooth surfaces, trying frantically to get a hold. Some people almost reached the top, to be pulled down by those behind them. Some, more agile than the rest, succeeded in getting away; but many more were shot as they clambered up, and some as they sat poised on the top, before leaping down on the further side.

Twenty thousand people were caught beneath the hail of bullets: all of them frantically trying to escape from the quiet meeting place which had suddenly become a screaming hell.

The firing went on for 10 to 15 minutes—that is, till the cartridges ran out. Each man armed with a rifle shot 33 bullets apiece. Dyer later admitted that if more ammunition had been available

he would have used it on the crowd.

At 5.30, General Dyer and his army contingent left Jallianwala Bagh, leaving behind them a raging inferno. About 2,000 dead and wounded were lying there; many were crying out for water. But leave alone water, no assistance of any kind was available. All over the place the wounded were dying but the doctors were too terror-stricken to come inside the Bagh. People whose friends and relations had come to the meeting were also afraid of coming in. A few of the wounded crawled as far as the lanes, but then could go no further, and died there, drenched in their own blood.

After some time, the citizens of Amritsar, with fear and trepidation, came in search of their friends and relatives. But soon it became dark. How were they to look for their dear ones in the darkness? How were they to recognize them when there were piles of corpses everywhere? Besides, no one was allowed to be out after 8 o'clock.

There were some people who found their relatives and took them away, but most came out of the garden by 8 o'clock, leaving the wounded lying groaning with pain on the open ground. It is said that about a thousand wounded people lay all night in Jallianwala Bagh. Some had lost so much blood that they could not survive till the morning.

But General Dyer was still not satisfied. The same day, at 10 p.m. he led an army contingent through the streets of Amritsar to see if anyone was about after 8 p.m. "Are my orders being obeyed or not?" As he himself put it: "The city was absolutely quiet and not a soul was to be seen."

In the aftermath of this terrible incident, when facts and figures began to be collected, General Dyer made his statement to the General Staff Division on 25 August 1919:

I fired and continued to fire till the crowd dispersed, and I consider that this is the least amount of firing which would produce the necessary moral and widespread effect it was my duty to produce if I was to justify my action. If more troops had been at hand the casualties would have been greater in proportion. It was no longer a question of merely dispersing the crowd, but one of producing a sufficient moral effect, from a military point of view, not only on those who were present, but more specially throughout the Punjab. There could be no question of undue severity.

There was sharp condemnation in both Britain and India of the incidents in the Punjab, and demands for an investigation resulted in the Hunter Commission being set up in October 1919.

(From NBT's Publication *Jallianwala Bagh*)

कालापानी : क्रांतिकारियों का तीर्थस्थल

अल्पना भसीन

''प्राण काँपते थे सुनकर जो नाम
कैद में जिसके नहीं बच पाती थी जान
वे ऊँची-ऊँची दीवारें, जिसके पार न जा सके पुकारें
वे काल-कोठरियाँ, था जिनमें छाया घना अँधेरा
मानो काल ने वहाँ सन्नाटा हो बिखेरा
कालापानी का वह भयानक कारावास
भारतीयों को रह-रहकर याद आता है आज।''

कालापानी (सेल्युलर जेल) भारत के इतिहास का एक काला अध्याय है। 'कालापानी' शब्द सुनकर आज भी भारतीयों का मन काँप उठता है।

भारत की आज़ादी के लिए लड़ी गई सन् 1857 की पहली लड़ाई के बाद भारतीयों पर अँग्रेज़ी सरकार का शोषण और बढ़ गया था। देश की जनता पर बहुत ज़ुल्म ढाए गए। सन् 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटेन की सरकार ने अंडमान द्वीप समूह में एक दंडी-बस्ती बनाकर विद्रोहियों को वहाँ कैद करना शुरू कर दिया था। अंडमान की इसी दंडी-बस्ती को 'कालापानी' तथा कैदियों को 'दामिली' का नाम दिया गया।

यह जेल 1906 में क्रांतिकारियों को सज़ा देने के लिए बनवाई गई थी। यहाँ देशभर से आजीवन कारावास की सज़ा पाए भारतीय कैदियों को लाया जाता था। चूँकि इस जेल की बनावट सेल (कोठरी) जैसी है इसलिए इसे सेल्युलर जेल कहा गया है। सेल्युलर जेल साइकिल के पहिए की तिल्लियों की तरह सात दिशाओं में फैली थी। इसमें सात खंड थे और प्रत्येक खंड में तीन मंज़िल थीं।

इस जेल में कुल 696 कोठरियाँ थीं जिन्हें कैदियों को एक-दूसरे से अलग रखने के लिए विशेष रूप से बनाया गया था।

'कालापानी' एक ऐसा स्थान था जहाँ से कोई भी कैदी जीवित वापस नहीं लौटता था। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अनुसार सेल्युलर जेल, फ्रांस की बास्तिल जेल से अधिक खतरनाक थी, जहाँ व्यक्ति को आत्म-हत्या करने के लिए मजबूर कर दिया जाता था।

यहाँ स्वतंत्रता सेनानियों से बहुत कठोर कार्य करवाए जाते थे, साथ ही, उन्हें अकथनीय यातनाएँ दी जाती थीं। इनमें कोल्हू पर तेल पिराई करना, पत्थर तोड़ना, लकड़ी काटना,

एक हफ्ते तक हथकड़ियों में बँधे खड़े रहना, चार दिन तक भूखे रहना आदि शामिल थे। तेल पिराई मिल में काम करना तो और भी कष्टकारी था, क्योंकि यहाँ साँस लेना बहुत कठिन होता था। जुबान सूख जाती थी, दिमाग सुन्न हो जाता था, हाथों पर छाले पड़ जाते थे। कई कैदियों की इसमें जान जा चुकी थी। परंतु यदि पूछा जाए कि उनका अपराध क्या था तो इसका एक ही और सीधा जवाब था– वे अपनी मातृभूमि से प्यार करते थे और उसे अँग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना चाहते थे।

इस जेल में भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों को रखा गया था, जिनमें सावरकर बंधु, उल्हासकर दत्त, महावीर सिंह, पं. परमानंद, भाई परमानंद, नानी गोपाल, बाबू राम हरि, लद्धाराम, वारींद्र कुमार घोष, पृथ्वी सिंह आज़ाद, पुलिन दास आदि शामिल थे। ये सभी देशभक्त अपनी मातृभूमि पर तन, मन, धन और परिवार को न्योछावर करने को तैयार रहते थे, लेकिन अपने देश को आज़ाद देखना चाहते थे। इन्हें

देखकर तो ये पंक्तियाँ याद आती हैं :

''हे मातृभूमि, जब तक ये जीवन है
तुझ पर ही अर्पण है
हे मातृभूमि, तू ही मेरा आधार है
तुझ पर जाँ निसार है
मातृभूमि, तुझको नमस्कार है
मातृभूमि, तुझको नमस्कार है!''

अंतत: 15 अगस्त, 1947 को भारत में ब्रिटेन की सत्ता के समापन के साथ ही 'कालापानी' का विचार भी इतिहास का एक कड़वा सच बनकर रह गया।

स्वतंत्रता-सेनानियों के देश की आजादी के लिए किए गए महान त्याग व बलिदान तथा भीषण यातनाएँ सहने के कारण अब यह जेल हर देशवासी के लिए महान तीर्थ बन चुका है। सेल्युलर जेल की 'राष्ट्रीय स्मारक' के रूप में घोषणा स्वतंत्रता-सेनानियों के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है।

मोर

गोविन्द भारद्वाज

वन–उपवन में नाचे मोर,
पंख फैलाकर चहुँ ओर।

पंछियों का राजा प्यारा,
राष्ट्र–पक्षी यह हमारा।

पी–हू पी–हू प्यारा शोर,
वन–उपवन में नाचे मोर।

झूमता अपनी मस्ती में,
गाँव–गाँव और बस्ती में।

पल में होता भाव विभोर,
वन–उपवन में नाचे मोर।

सिर पर इसके सुंदर ताज,
सबके दिल पर करता राज।

बुलाए ये घटा घनघोर,
वन–उपवन में नाचे मोर।

'पितृकृपा' पीलीखान
नयी बस्ती, पुलिस लाइन, अजमेर (राजस्थान)

मछली जल की रानी है

संगीता सेठी

आस्था के जन्मदिन पर पापा-मम्मी मछली घर लाए हैं। आस्था तो वहाँ से हटने का नाम ही नहीं ले रही थी। काँच की दीवारों पर अपना माथा टिकाकर मछलियों को देख रही थी। केसरिया रंग की मछली कैसे ऊपर-नीचे तैर रही थी। वो सफेद मछली तो अपना छोटा-सा मुँह खोल रही थी। नीले रंग की मछली के पतले पंख हिलते हुए कैसे खूबसूरत लग रहे थे।

''आस्था, अब सो भी जाओ! रात के ग्यारह बज गए हैं।''

''नहीं मम्मा! जब ये तीनों मछलियाँ सो जाएँगी तब सोऊँगी।''

''अरे लाडो! इनकी भी भला रात होती है!'' पापा ने हँसकर कहा।

आस्था उस रात सोई तो बस मीठे सपनों की दुनिया में चली गई। सुबह उठी तो चहकती हुई मम्मी के पास गई।

''मम्मी! क्या हम भी मछलियों की तरह तैर सकते हैं?''

''हाँ-हाँ! पर केवल सपनों में।''

''क्या! हम मछलियों को छू सकते हैं?''

''नहीं! वो डर जाएँगी।'' मम्मी-बेटी का संवाद चल रहा था।

आस्था अपनी नर्सरी की कविता गाते हुए मछलीघर की तरफ बढ़ गई।

मछली जल की रानी है
जीवन उसका पानी है
हाथ लगाओ डर जाएगी
बाहर निकालो मर जाएगी।

उसने देखा, तीनों मछलियाँ अलग-अलग कोनों में चुपचाप पड़ी थीं। आस्था ने काँच को थपथपाया तो तीनों मछलियाँ पानी में इधर-उधर डोलने लगीं। आस्था भी सहम गई। मम्मी ने पीछे से आकर कहा, ''देखो, मैंने कहा था न कि ये हाथ लगाते ही डर जाती हैं!''

''पर मैंने तो इन्हें बाहर से ही छुआ है, तब भी डर गई! मैं तो इन्हें पानी में जाकर छूना चाहती हूँ।''

''अभी तो ये भूखी हैं, इन्हें दाना डाल दो।'' मम्मी ने दाने का पैकेट खोला और नन्ही आस्था के हाथ में दाने रख दिए।

शाम को पापा आए तो आस्था मछलीघर के आगे ही बैठी अपना होमवर्क कर रही थी।

''अरे, लाडो का होमवर्क भी मछली बिना नहीं! तुझे जल्द ही मछलियों से मिलवाऊँगा।''

''वो कैसे?'' आस्था उछलकर पापा की

गोद में जा बैठी। पापा ने बताया कि इन छुट्टियों में वे आस्था को थाइलैंड की सैर करवाएँगे।

''अरे वाह! तो हम हवाई जहाज पर बैठकर जाएँगे।'' आस्था चहक उठी।

''हाँ! और थाइलैंड के पटाया शहर के समुद्र में अंडरवाटर सी भी है।'' पापा बोले।

''मतलब?'' आस्था कुछ समझते हुए भी और समझना चाह रही थी। पापा ने जो थाइलैंड के बारे में बताया तो आस्था खुशी के मारे उछल पड़ी। बस, परीक्षा खत्म होते ही आस्था और उसकी मम्मी ने थाइलैंड जाने की तैयारी शुरू कर दी।

थाइलैंड की राजधानी बैंकॉक पहुँचते ही आस्था का मन तो बल्लियों उछलने लगा। एअरपोर्ट से तीन घंटे की यात्रा के बाद आस्था अपने पापा के साथ पटाया में थी। सागर तट के किनारे पहुँचे तो पापा ने समुद्र में ले जाने वाले दल से बात की। छोटी-सी ट्रेनिंग के बाद आस्था भी तैयार थी समुद्र में उतरने को, जहाँ वह मछलियों को नज़दीक से देख सकेगी।

आस्था को भारी-सा हेलमेट पहनाया गया और एक लाइफ जैकेट भी। पैरों में गम बूट। समुद्र के अंदर जाती हुई सीढ़ियों पर आस्था को पापा-मम्मी के साथ खड़ा किया गया। समुद्री दल के नेता ने उसे बताया कि जब वे समुद्र के अंदर पहुँचेंगे तो तीन इशारे ही काम आएँगे। अगर आप ठीक महसूस कर रहे हैं तो हथेली फैला देना। जब आप जाने के लिए

उसके कितनी नज़दीक थीं! उसने छूना चाहा तो वो दुबककर दूसरी दिशा में चली गईं। उसे अपने बचपन की कविता याद आई... मछली जल की रानी है। ज़ेनिथ ने उसे ब्रेड दिया कि वो मछलियों को खिला दे। अरे, ये क्या! ढेर सारी मछलियाँ उसके चारों तरफ आ गईं। उसे लग रहा था वह अपने घर में रखे मछलीघर में घुस गई है।

तैयार हों तो अँगूठा नीचे कर देना और यदि आप ठीक महसूस न करो तो अँगूठा ऊपर कर देना।

आस्था ने अँगूठा नीचे किया तो दल की सदस्य जेनिथ हाथ पकड़कर उसे नीचे की तरफ ले गई। आस्था हेलमेट में से समुद्र के पानी को देख रही थी। समुद्र के और नीचे जाने पर आस्था के कान दुखने लगे तो उसने घबराकर अँगूठा ऊपर कर दिया। जेनिथ ने झट से उसे समुद्र से बाहर की तरफ निकाल लिया, पर आस्था को तो अभी मछलियाँ देखनी थी। उसने साहस किया और दल की सदस्य ज़ेनिथ को वापस अंदर जाने के लिए इशारा किया। इस बार वह पहले से बेहतर महसूस कर रही थी। उसके ईर्द-गिर्द मछलियों का संसार था। नीली, पीली और बैंगनी मछलियाँ

आस्था रोमांचित थी। थोड़ा आगे बढ़ी तो एक स्टारफिश उसके हाथ पर आकर चिपक गई। समुद्र के तल पर उसे हरे-नीले-पीले शैवाल नज़र आ रहे थे। वहाँ शंख और सीपियों का भंडार था। बीच में लाल-हरे नग जैसे दिखाई दे रहे थे। जैसे उसकी मम्मी मूँगे की माला पहनती है। समुद्र में एक किलोमीटर की चहलकदमी के बाद जेनिथ ने ऊपर जाने का इशारा किया।

आस्था समुद्र से बाहर आई तो देखा, पापा पहले ही आ चुके थे। आस्था को लगा, वह अभी-अभी एक खूबसूरत सपना देखकर लौटी है।

1/242, मुक्ता प्रसाद नगर
बीकानेर (राजस्थान)

Easy-going Harpey

Avril C. D’souza

Harpey was a young harp seal. She was sitting on ice floe and day dreaming.

“Come on Harpey. You can’t cling to your ice floe forever. You need to swim,” mother harp seal scolded.

Strangely Harpey was terrified with the idea of swimming.

“Oh! Please Maa, I love to be here,” Harpey said. She curled up and pretended to doze off.

“You can’t get your food if you lie there all day,” mother reminded.

“Could you get me some food, please,” Harpey pleaded. She was hungry, but she was afraid to swim. She was ashamed to say so.

“At least you could teach me to fly then I could get my food,” Harpey said.

“Silly Harpey, you need wings to fly,” said mother.

“Then I’d rather jump from one tree to another like a monkey,” suggested Harpey.

“Seal-food does not grow on trees, Harpey,” mother said.

“I don’t like to fight with waves,” whined Harpey.

“If you live without trying, you’re sure to be starving,” mother said.

“But don’t you remember, I tried yesterday,” Harpey whimpered.

“Winners never quit trying and quitters never win,” said her Maa sternly.

Harpey was awfully hungry. “Please Maa, I’m hungry could you get me some food,” she pleaded. That made Maa

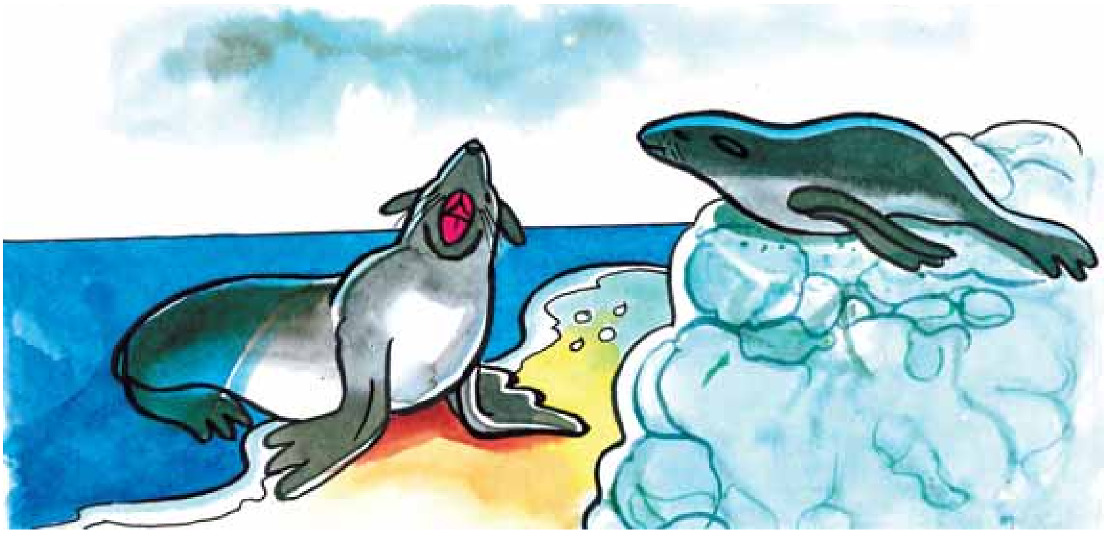

angry. "You better get it," she scolded.

Dejected mother slid off the ice floe, and swam away. Harpey dozed and then slept off.

An hour later, Harpey woke up to the sounds of a wind storm. Rain came pouring from dark clouds. Huge waves pulled and pushed Harpey's ice floe. Harpey looked around and saw other seals on their ice floes. She felt secure.

Suddenly a giant wave crashed into her ice floe. It split into two. Harpey clung to her ice bed with her clawed flippers. A very big wave almost turned her bed over. Harpey went slithering to the side. She clung fast. Her heart was beating like a wild drum.

Another huge wave almost turned her ice floe. Harpey again went slithering to the side. She was frightened.

"Maa, Maa!" Harpey cried out in horror. At that moment she realized that Maa was nowhere and that was why there was no answering cry.

Soon Harpey was numb with the cold and dumb with fear. Another wave came rolling and this time Harpey's ice floe crashed into splinters.

"Maa, Maa!" cried Harpey.

She bobbed up and down in the frightful, swishing water. She tumbled, she choked and spluttered. She flapped her flippers in fright. She thrashed her tail in despair. She whined and sobbed.

"Where was her Maa?" she wondered.

And suddenly Harpey was swimming!

Before long the storm had passed. It had stopped raining. Fear had left Harpey. She felt good all over. The swishing of waves seemed like music to her ears.

"Hi Harpey, having fun?" someone asked. Harpey screamed in delight.

"You're doing great Harpey," someone called out. It was her Maa. A thrill shot through Harpey.

"If I had known it was so easy, I would have done this long ago, Maa," Harpey said. She was so happy that she did not want to stop swimming.

"You are the best Harp seal, Harpey," said Maa happily.

"You are the best Maa for letting me find my talent," Harpey told her.

St. Xavier's School, Camp,
Belgaum (Karnataka)

घमंडी रहे अकेला

रश्मि बड़थ्वाल

एक फार्म हाउस था। वहाँ बड़े-बड़े पेड़ थे। क्यारियाँ थीं। फूल थे। सुंदर-सा एक घर था, और उसके पास ही अस्तबल था। अस्तबल में एक घोड़ा रहता और एक गधा।

फार्म हाउस में कई माली और नौकर काम करते थे। गधे पर लादकर वे सब्जियाँ बाज़ार पहुँचाते। खाद लादकर लाते और भार ढोने वाले दूसरे काम भी करते।

घोड़े पर केवल मालिक सवार होते। वे रोज घुड़सवारी करते। उनकी सुबह-शाम की सैर घोड़े पर ही होती। गाँवों में, जंगलों में घूमना उन्हें अच्छा लगता। बस घोड़े की दोस्ती से वे अपना शौक पूरा कर लेते। बाकी समय घोड़ा अस्तबल में रहता। नौकर उसे खिलाते-पिलाते, खरहा करते, मालिश करते।

दिन भर घोड़ा और गधा चुप रहते। खाते, सोते, काम करते या थकान मिटाते। रात को अस्तबल में कोई आदमी नहीं आता था। कोई चिड़िया तक नहीं आती थी। बस घोड़ा और गधा ही वहाँ पर रह जाते। तब वे दोनों बातें करने लगते। दिन भर क्या किया, कहाँ घूमे, क्या देखा, क्या खाया, यही बातें करते रहते।

गधे की बातें सीधी-सादी होतीं पर घोड़े को तो अपनी ताकत का घमंड था। वह जब-तब गधे का मजाक उड़ाता। गधा झगड़ा पसंद नहीं करता था इसलिए चुप ही रहता। घोड़े को बढ़ावा मिलता रहा और वह गधे पर ताने कसने लगा।

''ओ बौने, तुझ पर कोई सवार नहीं हो सकता। तू है किस काम का?'' एक दिन घोड़े ने कहा।

''धोबी मुझ पर गठरी सहित बैठ जाता है। मैं कई-कई बोरे लादकर आता-जाता हूँ। काम का न होता तो मालिक मुझे पालते ही क्यों!''

''अबे जा! मलिक ने तो तुझे इसलिए पाला है कि मेरा मनोरंजन होता रहे। वरना अकेला मैं बोर न हो जाता!'' घोड़ा हँसता।

घोड़े की बात पर गधा उदास होकर चुप हो जाता। पहले तो घोड़ा ताने मारकर ही सो जाता था पर बाद में वह गधे को सताने के लिए लात भी मारने लगा। गधा बेचारा उससे छोटा था इसलिए मन मारकर रह जाता।

एक दिन घोड़ा उसे बार-बार कोंच रहा था, ''गधे, ओ गधे! गधे का मतलब ही बेवकूफ होता है। जानते हो?''

कई बार चुपचाप सुनकर गधा बोला, ''यह अर्थ सही नहीं है। गधे का मतलब गधा ही होता है। गधा माने एक पशु, बेवकूफ नहीं।''

''जा-जा, सारी दुनिया जानती है कि गधा मूर्ख होता है। एक तू मूर्ख, एक उल्लू मूर्ख। बस, दो ही प्राणी मूर्ख होते हैं।''

"गलत कहते हैं लोग। उल्लू भी मूर्ख नहीं होता। वह तो बड़ा चतुर जीव होता है। इतनी तरह की बोलियाँ बोलता है कि दूसरा कोई बोल ही नहीं सकता। उसका दिमाग तो बहुत तेज होता है।"

"और तेरा दिमाग कैसा है? तेरे पास दिमाग होता तब तो तेज या धीमा होता, पर तू बेचारा तो बिना दिमाग का है!" घोड़े ने हँस-हँसकर गधे पर दुलत्ती जमा दी।

गधा ढीला-ढाला-सा खड़ा था। घोड़े के प्रहार से वह नीचे गिर पड़ा। उसे बहुत चोट लगी। वह उठ नहीं पाया।

सुबह मालिक अस्तबल में आए। गधे को गिरा हुआ देखा, "अरे, तुझे क्या हो गया?" मालिक ने पूछा।

गधे ने अपनी भोली आँखें घोड़े पर टिका दीं। मालिक समझ गए। उन्होंने गधे की चोटें देख ली थीं।

फिर डॉक्टर बुलाया गया। गधे की मरहम-पट्टी हुई। उसकी विशेष देखभाल होने लगी। जब वह ठीक हो गया तो मालिक ने पूछा, "तुम्हारा अलग कमरा बना दें?"

गधे ने ऊपर-नीचे सिर हिलाया।

मालिक ने अस्तबल को दो हिस्सों में बाँट दिया। जिधर से दीवारें दिखाई देती थीं उधर वाला हिस्सा घोड़े को मिला। जिधर से बगीचा दिखाई देता था वह हिस्सा गधे को मिला।

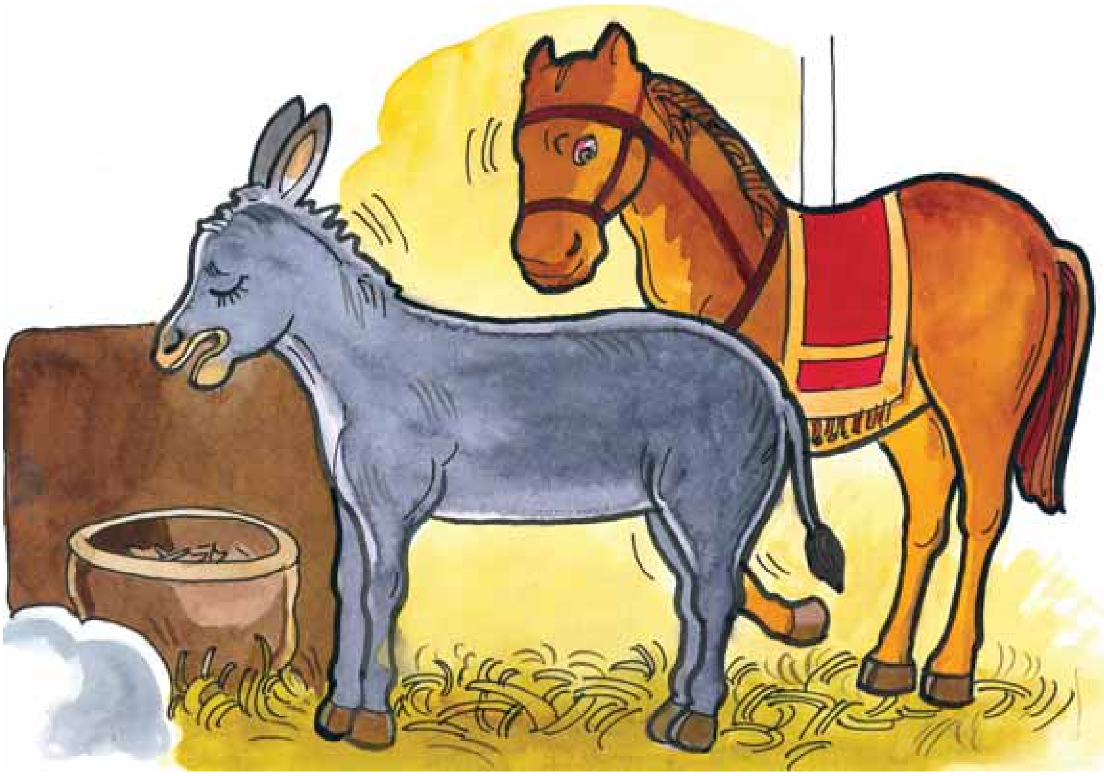

सुबह-सुबह चिड़ियों का झुंड आता। गधे की खिड़कियों पर बैठकर चहकता। दिन में कभी भँवरे हालचाल पूछते, कभी तितलियाँ आकर चुटकुले सुना जातीं। गधा कभी बोर नहीं होता। वह शांत रहता, मुस्कराता रहता, इसलिए उसके पास सभी का आना-जाना था। उसकी तरफ खूब चहल-पहल रहती।

उधर घोड़ा बिलकुल अकेला पड़ गया। न उसकी ओर तितलियाँ जातीं, न चिड़ियाँ, न भँवरे। कई दिन बीत गए। रात में उधर कभी-कभी चूहे आते। एक दिन एक चूहे ने पूछा, ''घोड़े, क्या तुम गूँगे हो?''

''नहीं, मैं बोल सकता हूँ। देखो, बोल रहा हूँ न!''

''तब क्या बहरे हो? तुमसे कोई बोलता तो है नहीं!''

घोड़ा गुस्से से हिनहिनाया, ''एक खुर रखूँगा तो तेरे जैसे हजार चूहे एक साथ मर जाएँगे। मुझसे पंगा लेता है!''

चूहा दौड़कर दूर गया, फिर जोर से बोला, ''अब समझा! तुम गुस्सैल हो और घमंडी भी। इसीलिए तुमसे कोई नहीं बोलता। रहो अकेले। मैं भी नहीं बोलूँगा।'' यह कहकर चूहा सर्र से भाग गया। घोड़ा उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सका। वह उदास हो गया। उसे समझ आने लगा कि चूहा मजाक में भी सही बात कह रहा था।

21, नील विहार, निकट सेक्टर 14
इंदिरा नगर, लखनऊ-16 (उ.प्र.)

राखी का त्योहार

अक्षिता

राखी का त्योहार है आया,
भाई-बहन का प्यार है लाया।
भैया मेरे भूल न जाना,
रक्षा का कर्तव्य निभाना।

आओ भैया, आओ भैया,
जल्दी से तुम हाथ बढ़ाओ।
रंग-बिरंगी राखी लाई,
अपने हाथों में बँधवाओ।

आओ तुमको तिलक लगाऊँ,
आरती उतार के बर्फी खिलाऊँ।
जल्दी से दे दो उपहार,
बहना का है यह त्योहार।

छह साल की अक्षिता हिंदी ब्लॉगिंग की दुनिया में एक परिचित नाम बन गई है। अक्षिता का ब्लॉग 'पाखी की दुनिया' हिंदी के टॉप 100 ब्लॉगों में एक है।

पुत्री-श्री कृष्ण कुमार यादव
निदेशक-डाक सेवाएँ, इलाहाबाद परिक्षेत्र
इलाहाबाद-211001 (उ.प्र.)

Loony Limericks

Ratna Manucha

A young damsel most fair
Walked around without a care
Along came a bee
Buzzing around her peskily
And soon her nose swelled to the
size of a pear!

Cricket is a game
Which has brought enough shame
To those who play night and day
It has led young men astray
Who actually wanted some fame!

There was a man from Sopore
Whose snore was as loud as a roar
It startled the neighbours
Who wanted no favours
Except that he tone down his
snore!

Principal
Little Flower School
6, Haridwar Road
Dehradun-248001 (Uttrakhand)

राम पहुँचा शहर

प्रभात कुमार दास

सारंडा नामक गाँव में एक लड़का रहता था, जिसका नाम था राम। वह 25 वर्ष का था। वह जितना कमाता उतने में खुशी से रहता था।

एक दिन उसने सोचा, 'क्यों न अधिक पैसे कमाने के लिए शहर जाया जाए?' उसने रात में ही अपना थैला तैयार कर लिया। थैले में उसके वस्त्र और कुछ पैसे थे। फिर वह सुबह के समय अपने थैले के साथ स्टेशन की ओर चल दिया। वह शहर जाने वाली ट्रेन में बैठ गया।

शहर पहुँचने के बाद वह रिक्शे के लिए स्टेशन से बाहर निकला। वह रिक्शे पर बैठने ही वाला था कि कोई उचक्का उसका थैला छीनकर भाग गया। राम चिल्लाता ही रह गया। फिर क्या करता वह? तब तक उसे भूख लगने लगी थी। उसने एक होटल में जाकर खाना माँगा तो उसे डाँट-फटकार कर होटल मालिक ने भगा दिया। तब उसे होटल के बाहर एक कूड़ेदान में फेंकी हुई रोटी मिली। उसने खाने के विचार से रोटी उठाई ही थी कि कुत्तों का एक झुंड उसने अपनी ओर आते देखा। वह भागता हुआ स्टेशन जा पहुँचा।

राम के पास अब कोई उपाय नहीं बचा था। वह रोने लगा। थोड़ी देर बाद उसने सोचा कि रोने से कुछ नहीं होगा। तब उसने एक होटल में काम के लिए मिन्नत की। होटल के मालिक ने उसे काम दे दिया। न चाहते हुए भी उसने जूठे बर्तन धोए और गंदे मेज साफ किए। कुछ दिनों तक काम करने के बाद कमाए हुए पैसों के साथ उसने गाँव जाने की सोची। उसने मालिक से अनुमति ली और अपने गाँव चला गया। वहाँ वह फिर से खेती कर एक खुशहाल जीवन बिताने लगा।

केंद्रीय विद्यालय
मेघाहातुबुरू-833223 (झारखण्ड)

The Baobab Tree

Anupa Roy

Lata ran from window to window of their new house.

"What a big garden. And see, there is a forest on the hills," exclaimed Lata.

"These are the botanical gardens, Lata," her mother replied.

Her mother carefully unpacked a trophy from the box. She dusted it and put it on the shelf.

Her mother said, "Your father is now curator of these gardens."

Lata jumped up and down. "Oh! All those hills and the trees growing on them?"

She scurried towards the back yard and said, "Father, Mother! Come and see the upside-down tree."

Her parents came out.

"This is Baobab tree – from Africa," laughed her father, who knew a lot about trees.

Lata stared at the funny tree which seemed to have its roots in the air.

"Let me tell you the story of the Baobab," said Lata's father.

In the garden of the Great Spirit – for that is the name Africans have given to the God, many trees were being planted. The trees stood proudly – happy to be part of the garden. Except one tree – the Baobab. It wasn't happy and complained loudly.

"I want to be taller than the Palm. I want to be more beautiful than the Flame tree and I want more fruits like the Fig", said the Baobab.

"I want... I want..." he kept on grumbling.

At last the Great Spirit was fed up. He picked up the Baobab and flung it over the wall of his heavenly garden. The Baobab flew through the air – down and down and landed on earth - upside down. And so, African people say it has grown that way ever since – with its roots in the air. Of course it can no longer complain.

There are many such folktales in Africa about the Baobab. It is a very special tree. Many people worship it and call it *Um* which means mother. The Bantu people believe that the Baobab holds up the sky and Resa — the Rain God lives in it.

"Tell me more, Father," said Lata.

Baobab is found in many parts of Africa and Madagascar. It is the largest tree that grows in the deserts. It flowers

for only one night in a year.

Do you know Baobab can live for five hundred years? When the Baobab becomes old, its trunk becomes hollow and provide living space for humans. Africans use it as tombs, stores, cattle stalls, markets, prisons and even bus stops! Inside one very large tree they have made a restaurant!

"Imagine eating inside a tree, Father?" said Lata.

But most hollow Baobabs are also home for snakes, bats, bush-babies and bees. Elephants love to eat its spongy outer bark. Sometimes they eat up the entire tree. This is because the tree can contain up to 4,000 litres of water in its trunk!

"Just like a water tank," said Lata.

The trunk is also peeled off to make ropes, thatching for roofs and clothes. And at one time the fiber was exported to India and England to make banknotes. But unless very badly damaged it can re-grow its trunk!

"What a fantastic tree!" said Lata.

Baobab gives more than water. Its leaves are dried to make porridge. It is a medicine for diseases like diarrhoea, asthma and fever.

The fruit pulp is powdery and often used instead of milk.

Ground and roasted seeds are used as tooth-powder.

Scientists have found that the fruit pulp has lots of Calcium which is natural soluble fibre and is good for bones, stomach and liver. The fruits and leaves of the Baobab tree have more Vitamin C than oranges.

Even the seeds and seed oil are good. Scientists have recently identified an alkaloid–adansonin in Baobab.

"Without Baobab, life in Africa would be harder", said Lata thoughtfully.

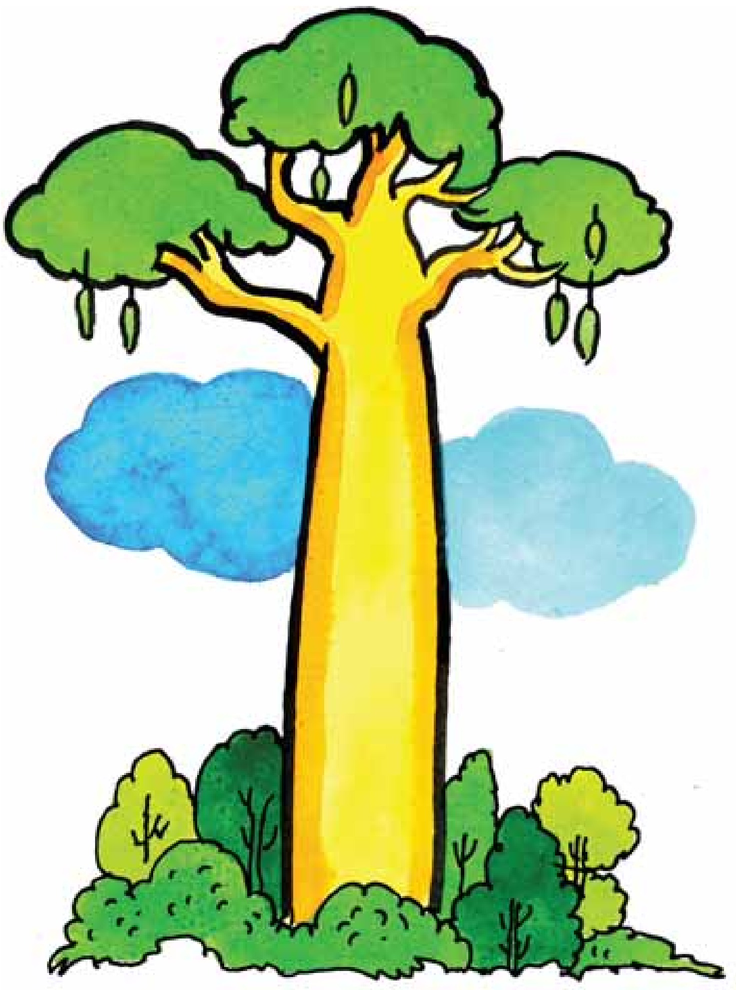

Many African organizations use Baobab as their symbol. A lot of research work is going on to find out how it can be used. For Africans, Baobab is the tree of life.

"So, it was for good that the Great Spirit threw it out." said Lata.

"Perhaps," smiled her father.

Alkaloids are nitrogenous chemicals that are found in plants and even some animals. They are important source for making medicines.

anupa_roy@yahoo.com

My Page

When Raju began to work hard!

Yash K.K.

Once there was a boy, Raju. He was in seventh standard and was an average student. When his final examinations were drawing nearer, he started going to the temple everyday and prayed to God for good grades.

His parents were very strict. They arranged a home tutor for him. When his tutor came Raju told him, "I want to clear my examination with good grades but don't know how. Please help me out!"

His teacher replied, "Your grades, your marks, your future is in your own hands. You will have to study hard to score well."

Hearing this, Raju was disappointed. He expressed his helplessness and said, "I will not get good grades because I'm an average student."

The teacher said, "I can only guide you my child. Your parents and teachers can only guide and help you wherever you face difficulties and rest is in your own hands. You know better than us what is good and bad for you."

He understood the advice of his teacher that everything depends on you. It is in your hands to choose the right path and started studying hard. After a month, when his results were out he was happy to see that he had got good grades. He realized that whatever he got was the outcome of the hard work that he had put in.

DAV Public School
Sahibabad – 201005
(Uttar Pradesh)

विशालतम पक्षी : शुतुरमुर्ग

सतीश कुमार अल्लीपुरी

संसार का सबसे बड़ा पक्षी शुतुरमुर्ग है। इसकी ऊँचाई ढाई मीटर तक होती है तथा वजन एक सौ पचास किलोग्राम तक। शुतुरमुर्ग अफ्रीका में पाया जाता है। यह भारत में केवल चिड़ियाघरों में ही देखा जा सकता है। शुतुरमुर्ग को अँग्रेजी में 'ऑस्ट्रिच' कहते हैं।

शुतुरमुर्ग एक ऐसा पक्षी है जो उड़ नहीं सकता। यह दौड़ता है। इसका कारण इसके पंखों की पेशियों का विकसित न होना है। इसकी पूँछ भी बहुत छोटी होती है, जो उड़ने में सहायक नहीं है। लेकिन इसकी रफ्तार बहुत तेज होती है। यह 65 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकता है। इसके पैर बहुत

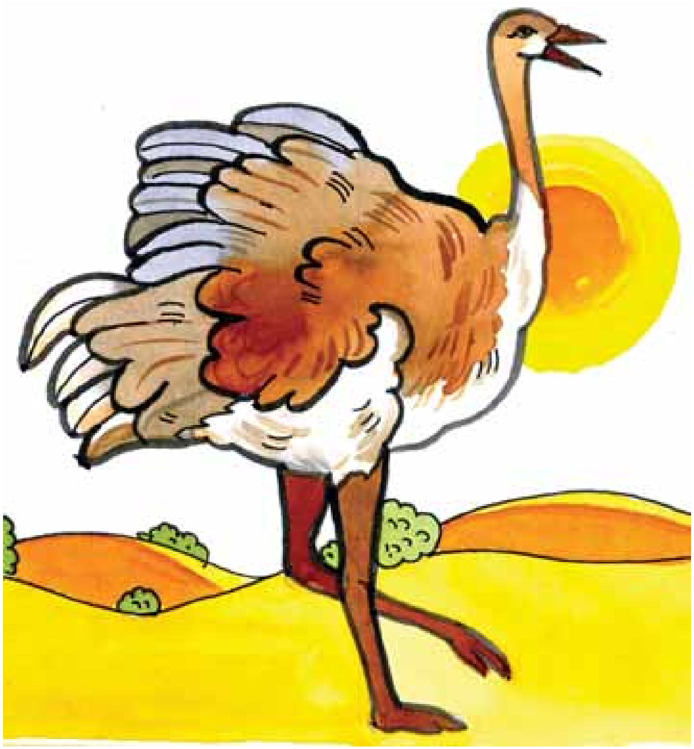

एक नरभक्षी पक्षी होता है। यह शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करता है। अपने आहार में यह छोटे साँप, छिपकलियाँ, कीड़े, छोटे पेड़-पौधों के पत्ते आदि खाता है। यह कंकड़-पत्थर को भी उसी प्रकार खा लेता है जैसे अन्य भोज्य पदार्थ को। प्राय: यह दोपहर को अपने भोजन की तलाश में निकलता है।

नर और मादा शुतुरमुर्ग देखने में एक जैसे होते हैं। मादा शुतुरमुर्ग रेत में गड्ढा बनाकर अंडे देती है। इसके अंडे सख्त कवच वाले तथा आकार में बहुत बड़े होते हैं। अफ्रीकन आदिवासी लोग इसके टूटे अंडों के कवच को बर्तन के रूप में भी प्रयोग करते हैं। अंडे देने के बाद मादा शुतुरमुर्ग उन्हें रेत से ढक देती है तथा उसके आस-पास कंकड़-पत्थर रखकर घोंसला जैसा बना देती है। यह अपने अंडों को सेती नहीं है। इसके अंडों को गर्मी धूप से मिलती है। अंडों तथा बच्चों की रखवाली नर और मादा दोनों ही करते हैं। इसके शिशु भी खतरे के प्रति विशेष रूप से सावधान रहते हैं। अंडों से निकले शिशु चार-पाँच दिनों में ही आत्मनिर्भर हो जाते हैं।

मजबूत होते हैं। इसके पैरों की बनावट भी घोड़े की टाँग जैसी खुरनुमा होती है, अन्य पक्षियों की तरह पंजेनुमा नहीं। यह रेगिस्तान में भी बहुत तेज दौड़ सकता है। शुतुरमुर्ग की आदतें भी रेगिस्तानी जीवन के अनुरूप होती हैं। यह कई दिनों तक बिना पानी पिये जिंदा रह सकता है। जब शुतुरमुर्ग को शत्रु का भय होता है तो यह अपनी गर्दन रेत के अंदर छिपा लेता है। इसी आदत के कारण लोग इसे मूर्ख पक्षी भी कहते हैं।

पहले शुतुरमुर्ग की बहुत-सी प्रजातियाँ थीं। लेकिन वे धीरे-धीरे विलुप्त हो गईं। अब इसकी सिर्फ तीन प्रजातियाँ ही बची हैं। शुतुरमुर्ग

2/345, पुष्प विहार
चंदौसी-202412 (उत्तर प्रदेश)

पुस्तक समीक्षा

हरिकृष्ण देवसरे की चुनिंदा बाल कहानियाँ

हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य के क्षेत्र में बेहद जाना-पहचाना नाम है। बच्चों के लिए लिखी उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उनकी चुनिंदा 15 कहानियाँ संकलित हैं। हर कहानी में कोई सीख, कोई संदेश या कोई सबक है। उदाहरण के लिए 'थिरकते फूल' कहानी पढ़कर हमें यह सीख मिलती है कि पेड़-पौधों के साथ भी हमें अच्छा बर्ताव करना चाहिए, क्योंकि इन्हें भी पीड़ा होती है। 'पुरस्कार' शीर्षक कहानी में युवा प्रतिभाओं को पुरस्कार राशि देने की नेताओं की झूठी घोषणा का विवरण है। कहानियाँ शिक्षाप्रद भी हैं और रुचिकर भी।

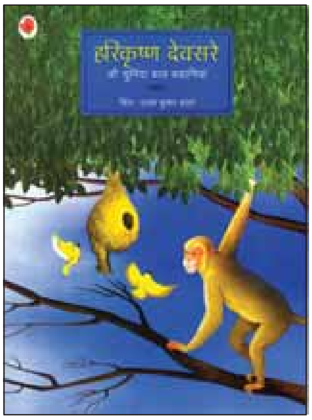

हरिकृष्ण देवसरे की चुनिंदा बाल कहानियाँ
चित्र : उत्तम कुमार बाला
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
रुपये 85.00

बाल कहानियाँ : फूलों से प्यार

प्रस्तुत कहानी संग्रह में 'फूलों से प्यार' सहित कुल 25 कहानियाँ संग्रहित हैं। लेखिका का मानना है कि उन्हें परियों की कहानियाँ नहीं रुचतीं, बल्कि अपने आस-पास की बच्चों के वास्तविक जीवन से जुड़ी समस्याओं, घटनाओं पर आधारित कहानियाँ अधिक पसंद आती हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियों में परी या कल्पना लोक की कोई कहानी नहीं है। उदाहरणत:, 'छाले अब नहीं' में दीपू को सब्जी नहीं खाने पर छाले निकल आने का डर दिखाकर उसे सब्जी खाने की आदत लगी।

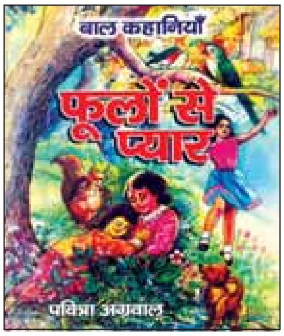

बाल कहानियाँ : फूलों से प्यार
पवित्रा अग्रवाल
अमन प्रकाशन, दिल्ली
रुपये 150.00

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication:14/08/2013